नेपोलियन की महाद्वीपीय व्यवस्था (भाग-2)

THE CONTINENTAL SYSTEM OF NAPOLEON

For :U.G.Sem-4,Unit-1,MJC-6

- 25 जनवरी 1807 को नेपोलियन ने **वार्सा आदेश(Warsaw Decree)** जारी किया ।इसके अनुसार प्रशा तथा हैनोवर के समुद्र तटों पर भी अंग्रेजी व्यापार के विरुद्ध प्रतिबंध लगा दिया गया। नेपोलियन ने आदेशों को दृढ़ता पूर्वक न मानने वाले देशों को युद्ध की धमकी दी। टिलसिट की संधि के पश्चात रूस तथा डेनमार्क ने भी अंग्रेजी माल का बहिष्कार कर दिया इससे अंग्रेजों की बहुत हानि हुई।
- **मिलान आदेश (Milan Decree)**- 17 दिसंबर 1807 को नेपोलियन ने मिलान आदेश जारी किया। इसके अनुसार घोषित किया गया कि जो जहाज अंग्रेजों को अपनी तलाशी देगा अथवा अंग्रेजी बंदरगाह में उपस्थित होगा उसका माल जब्त कर लिया जाएगा।
- **फाण्टेंब्ल्यु आदेश(Fontainebleau Decree)** - 18 अक्टूबर 1810 को जारी यह आदेश सबसे कठोर था। इसके अनुसार यह घोषित किया गया कि जो अंग्रेजी माल जब्त किया जाएगा वह खुलेआम जलाया जाएगा। एक न्यायालय की

स्थापना की गई जो अवैध ढ़ंग से व्यापार करने वाले व्यक्तियों को दंड देगा ।अवैध व्यापार के संबंध में सूचना देने वाले व्यक्तियों को पुरस्कार दिया जाएगा।

- नेपोलियन के महाद्वीपीय व्यवस्था का सामना करने के लिए इंग्लैंड ने **ऑर्डर इन काउंसिल (Order in council)** पास कर जवाब दिया। जनवरी तथा नवंबर 1807 में उसने घोषित किया कि यदि किसी भी जहाज में फ्रांस अथवा उसके उपनिवेशों का बना हुआ माल पाया गया तो उसे जब्त कर लिया जाएगा। अपने आदेश में विदेशी व्यापार को कायम रखने के लिए अंग्रेजों ने तटस्थ राज्यों को यह लालच दिया कि वह उनके माल पर कम चुंगी लगाएंगे।

<u>महाद्वीपीय योजना के परिणाम</u>

1. महाद्वीपीय व्यवस्था अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने में असफल रही ।ब्रिटिश व्यापार को नष्ट करना इसका उद्देश्य था जो पूरा नहीं हो सका। इंग्लैंड की परेशानी से भी कठिन परेशानी स्वयं फ्रांस को झेलनी पड़ी।
2. महाद्वीपीय व्यवस्था स्वयं नेपोलियन एंव यूरोप के लिए आत्मघाती सिद्ध हुआ। इस योजना को लागू करने के लिए

नेपोलियन ने अनेक देशों के खिलाफ कठोर कदम उठाए। नेपोलियन को अनेक देशों से युद्ध कर शत्रुता मोल लेनी पड़ी। इसी के कारण रुस से उसकी मित्रता भंग हो गई। पोप से शत्रुता हो गई। स्पेन तथा पुर्तगाल पर आक्रमण करना पड़ा। इससे फ्रांस के साधनों पर अत्यधिक दबाव बढ़ा स्पेन में राष्ट्रवादी विस्फोट ने नेपोलियन के साम्राज्य को छिन्न-भिन्न कर दिया और उसके पतन की राहें खोल दी। अंत में यह सब बातें उसके पतन में सहायक हुई।

3. महाद्वीपीय व्यवस्था इंग्लैंड के लिए आर्थिक दृष्टिकोण से हानिकारक सिद्ध हुआ। देश में अनाज बहुत महंगा हो गया मशीनों का बना समान गोदाम में इकट्ठा होने लगे इससे व्यापारी वर्ग घबरा गए। कागजी नोटों का मूल्य गिर गया अंग्रेजी बंदरगाहों में जब्त किया हुआ बहुत सा माल इकट्ठा हो गया था जिससे अंग्रेजी माल का मूल्य भी 40 से 50% तक कम हो गया। अपनी आर्थिक अवस्था को ठीक करने के लिए इंग्लैंड जनता पर अधिक कर लगाए तथा अधिक मात्रा में ऋण लिया।
4. इसी योजना के कारण इंग्लैंड को कोपनहेगन के बंदरगाह पर बम बरसाकर डेनिस बेड़े को नष्ट करना पड़ा। इसी के

कारण 1812 ई. में उसे संयुक्त राज्य अमेरिका से युद्ध करना पड़ा।

<u>महाद्वीपीय योजना का अंत</u>

अंग्रेजी माल के बहिष्कार से रूस की जनता को बहुत कष्ट हुआ। फलत: दिसंबर 1810 में जार ने ब्रिटेन से आयात प्रारंभ कर दिया । जार ने स्वीडन से भी संधि कर ली। 1812 में इंग्लैंड ने इन दोनों देशों से व्यापारिक समझौता कर लिया। प्रशा भी इन देशों का साथ दिया फलतः रूस,प्रशा, स्वीडन ने नेपोलियन की महाद्वीपीय योजना का स्पष्ट विरोध करना प्रारंभ कर दिया। पुर्तगाल तथा स्पेन ने भी नेपोलियन के विरुद्ध युद्ध प्रारंभ कर दिए। उसका भाई लुई बोनापार्ट इस योजना का विरोधी था। फलतः यह योजना टूट गई।

To be continued.....

BY:ARUN KUMAR RAI
Asst.Professor
P.G. Dept.of History
Maharaja College,Ara.